मू मि का

वेद और उपनिषदोंकी विचारधारा को जन - साधारण तक पहुँचानेके उद्देश्य से पुराणों की रचना की गयी हैं। साधारण मनुष्य कहानियों के द्वारा ही कोई तत्व या तथ्य आसानी से हजम करता है। इसलिए पुराणों के सम्बन्ध में कहा गया है -- " इतिहास (महाभारत) और पुराणों के द्वारा वेदों की विचार धारा को विस्तारित किया जाएँ। "[१] मनुष्य अद्भूत से प्रेम रखता है। चाहे वह कितना भी पढा लिखा हो या किसी भी स्तर के वातावरण में रहता हो। मनोरंजन के साथ तत्वबोध कराना हो तो कहानियों के अतिरिक्त और कोई दूसरा साधन नहीं है। ये कहानियाँ आमतौर पर अद्भूततासे भरी होती हैं, जिनका मूल वास्तव अर्थ बहुत कम पाठक समझते हैं। ऐसी कहानियों को घटनाओं का चमत्कार मात्र माना जाता था।

वर्तमान युग वैज्ञानिक युग है। इसकारण हर व्यक्ति किसी भूतकालीन घटनाका बुध्दिवादी अर्थ लगाना चाहता है। " वास्तव में पुराण भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि है, वे एक विश्वकोश जैसे हैं। समाज के धार्मिक, नैतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक विषयों की विवेचना इनमें मिलती है। पुराणों के शब्दों का केवल कोशगत अर्थ लेकर उनका अंतरंग नहीं समझा जा सकता, जिस काल में वे रचे गये है, उस काल की भाषा, संस्कृति, समाज - विज्ञान, धार्मिक एवं सामाजिक मान्यताएँ आदिका अध्ययन करनेपर ही उनका मूल अर्थ समझाना संभव है। " महाभारत जिसे पाँचवा वेद कहा जाता है, इतिहास नाम से विख्यात है। "[२] भारतीयों की धारणा है कि जीवन की

---

१ इतिहास पुराणाभ्यॉं वेदम् उपबृंहयेत् - वायुपुराण।

२ डॉ.देवर्षि सनाढय - हिन्दी के पौराणिक नाटक - पृ.५।

सभी समस्याओं का हल महाभारत में है। हमें चाहिए कि पुराणांतर्गत अर्थोंका ठीक अर्थ लगाएँ। मूल प्रतिपाद्य अर्थ व्यक्त करने पर इन कहानियों का `चमत्कारीपन` या `अद्भुतता` दूर की जा सकती है। हाँ, ऐसी कहानियों के अंतर्गत घटनाओं का तर्कसम्बध्द अर्थ अभिव्यक्त किया जाना चाहिए। `सत्यवान सावित्री` की कथा, `संजीवनी विद्या`, `वशिष्ठ - विश्वामित्र संघर्ष`, `देव दानव युध्द` आदि कथाओं के पीछे छिपा अर्थ और भाव व्यक्त करने पर अंतर्गत सत्य विदित होता है।

ऐसा ही एक प्रयास पं.रामेश्वर दयाल दुबेजी ने `अगस्त्य` नाटक द्वारा किया है, जो इस दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण है। `अहल्या` एकांकी में इसी लेखक ने अहल्या के शिला बन ने के चमत्कार का सही अर्थ बताया है। `गोकुल` खंडकाव्य में कृष्ण के अद्भूत और चमत्कारपूर्ण जीवन का स्वीकार करके भी उसे बोधगम्य बनाया है। इसके कृष्ण कृषि में उन्नति करनेवाले एक प्रयत्नशील व्यक्ति हैं, जिनके सहायता `हलधर` याने बलराम तथा नारी जागरण का काम राधा को सौंपा गया है। स्वयं कृष्ण गोवर्धन और पशुपालन को हाथ में लेकर व्रजभूमि के उन्नति करने में संलग्न है। `अगस्त्य` नाटक में भी `अगस्त्य` सम्बन्धी अनेक चमत्कारपूर्ण कृतियों का वर्तमान जीवन की समझ के अनुरूप अर्थ प्रस्तुत किया है।

वेदों से लेकर पुराणों और काव्यों में अभिव्यक्त `अगस्त्य` संबंधी घटनाओं का बुध्दिगम्य अर्थ इस नाटक की विशेषता है।

समकालीन अन्यान्य नाटकों की तुलना में `अगस्त्य` नाटक का विषय भिन्न है और पारंपारिक घटनाओं का वातावरण, एवं पात्रों का स्वीकार करके पं.दुबेजी का `अगस्त्य` के जीवित कार्य का नया अर्थ प्रस्तुत करने का प्रयास है। साहित्यिक दृष्टि से इस नाटक की विवेचना करके नाटकाकार ने पौराणिक जीवन को नये रूप में प्रस्तुत किया है। उसका अंतरंग दर्शानेका मेरा यह नम्र प्रयास है।